उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांकः 1283 /एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 21–12–2023

दिनांक : 21 दिसम्बर, 2023
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की सत्रहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की सत्रहवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 21 दिसम्बर, 2023 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, लखनऊ के वैज्ञानिक; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानुपर के मौसम वैज्ञानिक एवं गेहूँ प्रजनक; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; उद्यान विभाग; मत्स्य विभाग; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन वैज्ञानिकों; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक एवं कीट वैज्ञानिक द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

आगामी सप्ताह (21 दिसम्बर से 27 दिसम्बर, 2023) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी सप्ताह (21 दिसम्बर से 27 दिसम्बर, 2023) के प्रारंभिक चरण के दौरान प्रदेश में आंशिक रूप से बादल छाये रहने तथा प्रदेश के पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में 23 दिसम्बर, 2023 को कहीं–कहीं बूंदी–बांदी के साथ बहुत हल्की वर्षा होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त अन्य कृषि जलवायु अंचलों में मौसम मुख्यतया शुष्क रहने की संभावना है।

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से आंशिक रूप से अधिक रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत अधिकतम तापमान 20–22 डिग्री सेल्सियस, भावर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, पश्चिमी मैदानी, मध्य पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी भाग में अधिकतम तापमान 22–24 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में अधिकतम तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश के बुंदेलखण्ड एवं विध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम जबकि प्रदेश के अन्य भागों में सामान्य से आंशिक रूप से अधिक रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई को पश्चिमी एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 06 से 08 डिग्री सेल्सियस तथा उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में 08 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (28 दिसम्बर से 03 जनवरी, 2023) का मौसम दृष्टिकोण

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम दृष्टिकोण के अनुसार द्वितीय सप्ताह (28 दिसम्बर से 03 जनवरी, 2023) के दौरान प्रदेश में कोई प्रभावी वर्षा होने की संभावना नहीं है।

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में अधिकतम तापमान सामान्य से 04–06 डिग्री सेल्सियस अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से 02–04 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की संभावना है। प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस तथा भावर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, पश्चिमी

मैदानी क्षेत्र एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भागों में अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। प्रदेश के बुंदेलखण्ड एवं विध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में अधिकतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश के बुंदेलखण्ड एवं विध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में सामान्य से 02 से 04 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की संभावना है। प्रदेश के भांवर तराई, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में बुंदेलखण्ड एवं विध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में तथा मध्य पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 08 से 10 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिनांक 14 दिसम्बर, 2023 तक उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 134.84 लाख हे. के सापेक्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 122.33 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 90.71 प्रतिशत है गेहूँ के आच्छादन लक्ष्य 102.00 लाख हे. के सापेक्ष 89.61 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 87.86 प्रतिशत है। जौ के आच्छादन लक्ष्य 1.94 लाख हे. के सापेक्ष 1.89 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 97.79 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 0.15 लाख के सापेक्ष 0.07 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 48.41 प्रतिशत है। चना के लक्ष्य 6.85 लाख हे. के सापेक्ष 6.78 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 98.89 प्रतिशत है। मटर के लक्ष्य 4.68 लाख हे. के सापेक्ष 4.65 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 99.54 प्रतिशत है। मसूर के लक्ष्य 5.67 लाख हे. के सापेक्ष 5.75 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 101.47 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 4.60 लाख हे. के सापेक्ष 4.48 लाख हे. में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 97.50 प्रतिशत है जबकि राई–सरसों के 13.00 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 13.01 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 10.15 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- विलम्ब से बोई जाने वाली गेहूँ की प्रजातियों की बुवाई शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करें।
- रबी फसलों की बुवाई हेतु प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें।
- गेहूँ में बुवाई के 20 से 25 दिन बाद (ताजमूल अवस्था पर) आवश्यकतानुसार पहली सिंचाई अवश्य करें। ऊसर भूमि में 25 से 30 दिन पर सिंचाई करें। सिंचाई शाम के समय ही करें।
- तिलहनी फसलों में माहूं के प्रकोप के लिये मौसम अनुकूल है अतः संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- आलू में पछेती झुलसा के लिये मौसम अनुकूल है अतः प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- पशुओं में सभी तरह के रोगों का टीकाकरण विभाग द्वारा मुफ्त कराया जा रहा है पशुपालक निःशुल्क टीकाकरण अवश्य करायें।
- पशुओं को ठंड से बचाने के लिये सुबह शाम पशुओं पर झूल डालें तथा रात में पशुओं को अन्दर पशुघर में बाँधें।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की विलम्ब से बुवाई हेतु क्षेत्रीय संस्तुत प्रजातियों यथा डी.वी.डब्लू.–316, डी.वी.डब्लू.–107, पी.वी.डब्लू.–833, एच.डी.–3118, के.–7903 (हलना) एवं के.–9423 (उन्नत हलना) आदि की बुवाई 25 दिसम्बर तक करें।
- गेहूँ की अति विलम्ब से बुवाई हेतु क्षेत्रीय संस्तुत प्रजातियों यथा एच.डी.–3271, एच.आई.1621, डब्लू.आर.–544, के.–7903 (हलना) एवं के.–9423 (उन्नत हलना) आदि की बुवाई 15 जनवरी तक करें।
- गेहूँ में बुवाई के 20–25 दिन बाद (ताजमूल अवस्था में) हल्की सिंचाई अवश्य करें। विशेष रूप से ऊसर भूमि में पहली सिंचाई 25–30 दिन बाद हल्की ही करें। सिंचाई शाम को ही करें।
- गेहूंसा एवं जंगली जई के नियंत्रण हेतु आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 1.25 कि.ग्रा. की संस्तुत मात्रा को लगभग 500 से 600 पानी में घोलकर प्रति हे. बुवाई के 20 से 25 दिन बाद फ्लैटफैननाजिल से छिड़काव करें अथवा सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू.जी. की 33 ग्रा. (2.5 यूनिट) 300 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. फ्लैटफैननाजिल से छिड़काव करें।

- सॅकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के एक साथ नियंत्रण हेतु पैंडीमेथेलीन 30 प्रतिशत ई.सी. की 3.30 लीटर बुवाई के 03 दिन के अंदर संस्तुत मात्रा को लगभग 300 ली. पानी में घोलकर प्रति हे. फ्लैटफैननाजिल से छिड़काव करें अथवा मैट्रब्यूजिन 70 प्रतिशत डब्लू.पी. की 250 ग्रा. बुवाई के 20 से 25 दिन के बाद 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. फ्लैटफैननाजिल से छिड़काव करें।
- खड़ी फसल में यदि जिंक के कमी के लक्षण दिखाई दे तो 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 16 कि.ग्रा. यूरिया को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें। यदि यूरिया की टापड्रेसिंग की जा चुकी है तो यूरिया के स्थान पर 2.5 कि.ग्रा. बुझे हुये चूने के पानी में जिंक सल्फेट घोलकर छिड़काव करें (2.5 कि.ग्रा. बुझे हुये चूने को 10 ली. पानी में सायंकाल डाल दें तथा दूसरे दिन प्रातःकाल इस पानी को निथारकर प्रयोग करें)।

जौं की खेती

- फसल की पहली सिंचाई बुवाई के 30 से 35 दिन बाद कल्ले फूटते समय व दूसरी दुग्धावस्था में करें।
- खरपतवारनाशी का उपयोग गेहूँ की भांति करें तथा खरपतवारों के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का समय से प्रयोग करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- फसल में आवश्यकतानुसार दूसरी सिंचाई 60 से 65 दिन बाद कलियां बनने की अवस्था पर करें।
- यदि खरपतवारनाशी का प्रयोग न किया गया हो तो आधुनिक कृषि यंत्रों से निराई–गुड़ाई कर खरपतवारों का नियंत्रण अवश्य करें।
- माहू चित्रित बग, एवं पत्ती सुरंगक कीट के नियंत्रण हेतु डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. अथवा आक्सीडेमेटॉन–मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. अथवा क्लोरीपारीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. 1.0 लीटर अथवा मोनोक्रोटोफॉस 36 प्रतिशत एस.एल. की 500 मि.ली. प्रति हे. की दर से लगभग 600 से 750 लीटर पानी में छिड़काव करें।
- किसान भाई अपने खेत की निरंतर निगरानी करते रहे, सफेद रतुआ रोग के लक्षण दिखाई देने पर 600 से 800 ग्रा. मैकोजेब (डाईथेन एम–45) का छिड़काव 250 से 300 लीटर पानी में डालकर 15 दिन अंतराल पर 2 से 3 बार करें।

दलहनी फसलों की खेती

- चना में प्रथम सिंचाई आवश्यकतानुसार बुवाई के 45 से 60 दिन बाद (फूल आने के पहले) तथा दूसरी सिंचाई फलियों में दाना बनते समय करें फूल आने के समय सिंचाई कदापि न करें।
- खेत में जगह जगह सूखी घास के छोटे छोटे ढ़ेर को रख देने से दिन में कटुआ कीट की सूड़िया छिप जाती है, जिसे प्रातः काल एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिये।
- मटर में फूल आने के समय एक सिंचाई तथा दाना भरते समय दूसरी सिंचाई अवश्य करें।
- मटर की फसल में बुकनी रोग का लक्षण दिखाई देने पर नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत 2 कि.ग्रा. अथवा ट्राईडेमेफॉन 25 प्रतिशत डब्लू.पी. 250 ग्राम प्रति हे. लगभग 500 से 600 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

गन्ना की खेती

- गन्ने की कटाई जमीन के बराबर से करें।
- जाड़े में काटे गन्ने की पेड़ी में अपेक्षाकृत कम फुटाव होता है। अच्छा फुटाव प्राप्त करने के लिये सिंचाई के उपरान्त ओट आने पर 10 टन/हे. ताजा प्रेसमड डालकर गुड़ाई करें। इनसे फुटाव अच्छा होगा।
- चीनी मिल को गन्ना आपूर्ति करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि गन्ना साफ–सुथरा हो तथा कटाई के उपरान्त शीघ्र चीनी मिल पहुँच जाए।
- शरदकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- अगेती गन्ने में तनाबेधक के नियंत्रण हेतु क्लोरपाईरीफॉस एक लीटर सक्रिय तत्व 600 से 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

सब्जियों की खेती

- आलू में पछेती झुलसा तापमान 10 20 सेन्टीग्रेट के मध्य तथा अपेक्षित आर्द्रता 80 प्रतिशत के लगभग एवं मौसम बदलीयुक्त होने पर इस रोग का प्रसार अधिक होता है। रोग की रोकथाम के लिये लक्षण दिखाई देने से पूर्व ही जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू. पी. 1.5 – 2.00 कि.ग्रा प्रति हे के घोल का छिड़काव 8–10 दिन के अंतराल पर अवश्य करें।
- आलू की पत्ती मुड़ने वाला रोग की रोकथाम के लिये दैहिक कीटनाशक यथा फास्फोमिडान आक्सीडेमेटान–मिथाइल अथवा डाईमिथियोएट का 0.1 प्रतिशत घोल बनाकर 1–2 छिड़काव दिसम्बर जनवरी में करें।
- टमाटर तथा मिर्च में झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 0.2 प्रतिशत की 2 ग्रा. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- प्याज के बीज की नर्सरी में यदि पिछले माह बुवाई न हो सकी हो तो इस माह में अवश्य बीज की बुवाई कर लें।
- आर्द्र गलन रोग से बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें तथा ठंड एवं पाले से बचाव हेतु लो टनल से पौध उगायें।
- सब्जियों के खेतों में विशेषतया टमाटर, मिर्च फसल में विषाणु रोग का प्रकोप अधिका हो रहा है इसका फैलाव सफेद मक्खी/हॉपर कीट के द्वारा होता है इसके फैलाव की रोकथाम हेतु डाईमैथियोएट अथवा मिथाइल–ओ डिमेटॉन 1 मि.ली. को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- आम में मैगो मिलीबग की रोकथाम के लिये दिसम्बर के अंतिम सप्ताह तक वृक्ष के मुख्य तने पर लगभग 1/2 मीटर की ऊँचाई पर 25 से 30 से.मी. चौड़ी 400 गेज की पॉलीथीन शीट पर पतली सुतली से बांधकर दोनों सिरों को चिकनी मिट्टी तथा ग्रीस का लेप करें।

पशुपालन

- खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण कराया जा रहा है, यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- बरसीम अधिक खिलाने से पशुओं को अफरा हो सकता है अफरे से बचाव के लिये बरसीम के साथ सूखा चारा मिलाकर पशु को दें।
- वर्तमान मौसम को देखते हुए पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सुबह–शाम पशुओं पर झूल डालें तथा रात में पशुओं को अन्दर पशुघर में बॉधें।
- पशुबाड़े में बिछावन के रूप में पुआल/गन्ने की सूखी पत्तियों का प्रयोग करें जिसे एक या दो दिन में अवश्य बदल दें।
- पशुओं को अंतः कृमिनाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह से समय समय पर पिलायें।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिये पूरा दूध निकालें और दूध दोहन के बाद थनों को कीटाणुनाशक घोल में डुबायें।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वारा पर पशु चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु पशुपालक टोल फ्री हैल्पलाइन नं. 1962 पर सम्पर्क करें।

मत्स्य पालन

- वर्तमान समय शीत ऋतु का है ऐसे समय में तालाबों में अल्सरेटिव डिजीज सिड्रोम की बीमारी परिलक्षित होती है अतः कृषकों को सलाह दी जाती है कि अपने–अपने तालाबों में 2.00 से 2.5 कु. प्रति हे. की दर से बुझे हुये चूने का प्रयोग करें।
- तालाबों का जल स्तर 5 से 5.5 फुट तब बनाये रखे।
- तालाब में संचित मत्स्य बीज के पोषण हेतु रासायनिक उर्वरकों को मासिक रूप से 74 कि.ग्रा. प्रति हे. (सुपरफास्ट 25 कि.ग्रा., यूरिया 45 कि.ग्रा., म्यूरेट ऑफ पोटाश– 04 कि.ग्रा.) की दर से प्रयोग करें।

- वर्तमान में मछलियों में वृद्धि दर कम होती है अतः पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 प्रतिशत तक ही किया जाय।

रेशम पालन

- शहतूत नर्सरी स्थापना हेतु खेत/क्यारियों की गहरी जुताई कराकर तैयारी कर लें।
- पॉलीथीन बैग में यदि नर्सरी लगानी हो तो क्यारी बनाकर थैली में भुरभुरी मिट्टी तथा एफ.वाई.एम. मिलाकर भराई कर लें।
- शहतूत वृक्षों/झाड़ियों की प्रूनिंग ट्रिमिंग 31 दिसम्बर तक पूर्ण कर लें।
- प्रूनिंग के समय उन्नतशील प्रजाति की टहनियों से नर्सरी स्थापना का कार्य प्रारम्भ कर लें।
- टसर क्षेत्र के अर्जुन वृक्षारोपण में डाबा फसल के बाद अर्जुन वृक्षों के थाले बनाने तथा आवश्यकतानुसार वृक्षों की पोलार्डिंग का कार्य प्रारम्भ करें।

वानिकी

- पॉपलर की कटिंग क्यारियों में लगा दें। बकैन जैसे पतझड़ी पौधों का रोपण कर दें।
- वृक्षारोपण हेतु स्थल का चयन कर लें।
- बाँस अधिक से अधिक लगायें जाये। खेत के किनारों पर इसकी बाड़ भी लगाई जाय।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 11 जनवरी, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

21/12/23

(पियूष कुमार शर्मा)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र.।
16. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
17. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
18. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
19. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।

20. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
21. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
22. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
23. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
24. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
25. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
28. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
29. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
30. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
31. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
32. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
33. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
34. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
35. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
36. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
40. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
41. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
42. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
43. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
44. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
45. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

21-12-23

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की सत्रहवीं बैठक दिनांक 21 दिसम्बर, 2023 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद
2. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ
5. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
6. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उपकार, लखनऊ
7. श्री ए. के. शुक्ला, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश
8. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
9. डा. सोमवीर सिंह, व्हीट ब्रीडर, सेक्शन ऑफ रबी सीरियल, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
10. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
11. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
12. श्री नरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक, रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, लखनऊ
13. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
14. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी। (ऑनलाइन)
15. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा। (ऑनलाइन)
16. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा। (ऑनलाइन)
17. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस)। (ऑनलाइन)
18. श्री बालकृष्ण वर्मा, तकनीकी अधिकारी, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, सप्रू मार्ग लखनऊ
19. श्री कुंदन सिंह, कृषि विभाग, लखनऊ
20. श्री सुमित कुमार, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ